National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040
Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 520-522

चित्रकला के आधार पर नालन्दा के लोकजीवन का विवरण

रोहित कुमार गुप्ता
प्राचीन इतिहास, संस्कृत एवं पुरातत्व विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

भारतीय सभ्यता में कला का विस्तृत अर्थ उजागर है कला को आनन्द की सीमा तक ही नहीं बल्कि परमानन्द प्राप्ति का साधन माना गया है। पुरूषार्थ प्राप्ति में धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष सहायक साधन है ठीक उसी प्रकार कला के महत्वपूर्ण अंग स्थापत्य कला, मूर्तिकला एवं चित्रकला परमानन्द प्राप्ति में सहायक है। चित्रकला कला का ही अंग है जिसके माध्यम से भवनों की दीवारों, छतों, स्तम्भों, पर्वत गुफाओं आदि पर चित्रों का अंकन है जो प्राचीन भारतीय कला के प्रमुख स्रोत हैं। भारत में चित्रकला का इतिहास बहुत पुराना है। जिसमें नालन्दा कालीन चित्रकला का भी महत्वपूर्ण स्थान है। अजन्ता तथा बाध की चित्रकला के पश्चात पाल कालीन चित्रकला में नालन्दा के भित्तिचित्रों का महत्वपूर्ण स्थान है। पाल शासकों ने बिहार पर लम्बे समय तक शासन किया। उस समय नालन्दा, विक्रमशिला तथा उदन्तपुरी ज्ञान के साथ–साथ कलात्मक गतिविधियों के भी केन्द्र थे तथा पाल कालीन बौद्धकला अपने अन्तिम दौर से गुजर रही थी। इस काल में चित्रकला को भी फलने–फूलने का अच्छा अवसर प्राप्त हुआ, जिसके फलस्वरूप सरायटीले का विकास हुआ। पाल कालीन चित्रकला के अन्तर्गत अजन्ता की शैली में चित्रों का निर्माण हुआ जिसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण नेपाल के शाही दरबार, राय एशियाटिक सोसाइटी कलकत्ता, भारत कला भवन, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, काशी महाजन संग्रहालय, रामनगर, वाराणसी तथा बोस्टन संग्रहालय, अमेरिका में संग्रहीत हैं।[1]

नालन्दा से प्राप्त भित्तिचित्रों के अवशेष सीमित मात्रा में हैं, इसलिए उनका समय निर्धारण करना कठिन है, क्योंकि सरायटीले के उत्खनन से जिस मन्दिर का अवशेष मिला है, वह तो प्राचीन है, परन्तु उस पर बनी भित्ति चित्रकारिता अपेक्षाकृत बाद की है।[2] मन्दिर से पूर्णवर्मन का एक शिलालेख प्राप्त हुआ था, जिसकी तिथि 7वीं–8वीं शताब्दी ई0 है। नालन्दा से बुद्ध की खण्डित प्रतिमा मिली थी जिस पर दौड़ते हुए घोड़े का चित्र तथा पादपीठ पर अभिलेख अंकित है। जिससे पता चलता है कि यह अभिलेख 10वीं–11वीं शताब्दी ई0 का है।[3] इस आधार पर नालन्दा के भित्तिचित्रों का समय 10वीं–11वीं शताब्दी ई0 माना जा सकता है। उस समय यह क्षेत्र पालों के अधीन था। अतः यह भित्तिचित्र भी पाल कालीन है। साक्ष्यों के अभाव के कारण हम कह सकते हैं कि नालन्दा महाविहार की स्थापना भले ही गुप्तकाल की देन है, लेकिन नालन्दा चित्रकला के रूप में प्रसिद्ध हुआ यह पाल काल की देन है। अतः नालन्दा में चित्रकला का विकास पाल शासकों के समय में हुआ।

भारतीय चित्रकार अपनी चित्रकला में तीन तरह की तकनीकि का प्रयोग करते थे। यथा–1 फ्रेस्को, 2. टेम्परा तथा 3. तैल चित्र। सामान्यतः भारतीय चित्रकारों ने अपने भित्तिचित्रों के लिए टेम्परा तकनीकि का प्रयोग किया है। अजन्ता एवं बाध के गुफा चित्रों की भाँति नालन्दा में भी इसी तकनीकि का प्रयोग किया गया है। अजन्ता तथा बाध के गुफा चित्रों में रंगों को बांधने के लिए सरेस तथा गोंद का प्रयोग किया गया है, परन्तु नालन्दा के भित्तिचित्रों में रंगों को बांधने हेतु किस पदार्थ का प्रयोग किया गया है, स्पष्ट नहीं।[4] क्योंकि साक्ष्यों का अभाव है। फिर भी ऐसा लगता है कि नालन्दा में चूने को ही बंधेज के रूप में प्रयोग किया गया है। नालन्दा के चित्रकार, चित्रकारियों के लिए रेखांकन, रंगों का आरोपन तथा उसका उतार–चढ़ाव एवं उनकी पूर्णता आदि तकनीकों से पूर्ण परिचित थे। अगर रंगों की बात करें तो नालन्दा के भित्तिचित्रों में हल्का तथा टिकाउ रंगों का प्रयोग हुआ है। जिसे चूना पुती दीवार पर चढ़ाया गया है। सरायटीले के उत्खनित मन्दिर के गर्भगृह में ज्यामितीय अलंकरण सफेद तथा काले रंगों से तथा निचले भाग में बने मानव तथा पशु अलंकरण सफेद तथा लाल रंगों से बने हैं। प्राचीन भारतीय साहित्य में चित्रकला हेतु रंगा का उल्लेख है जिसमें नालन्दा में प्रयुक्त रंग (सफेद, काला, लाल) प्रमुख है। अजन्ता की चित्रकला में भी इन रंगों का अत्यधिक प्रयोग हुआ है। इससे स्पष्ट होता है कि नालन्दा के चित्रकला की रंगयोजना अजन्ता एवं बाघ के चित्रकला की रंगयोजना से मिलती जुलती है। अतः स्पष्ट है कि भारतीय चित्रकला में नालन्दा की चित्रकला अपना अलग पहचान रखती है तथा अजन्ता एवं बाघ की चित्रकला नालन्दा में अधिक स्पष्टता से विकसित हुयी।

नालन्दा के कलाकारों ने कला की न केवल गचकारी, पाषाण एवं कांस्य मूर्तियों बल्कि चित्रकारी के माध्यम से भी अभिव्यक्ति किया है। हालांकि गचकारी, पाषाण तथा कास्यं कला की तुलना में ये चित्रकारियां लम्बे समय तक सुरक्षित नही रह सकती थी, फिर भी जो आज उपलब्ध, उनसे स्पष्ट है कि नालन्दा के चित्रकार इस विद्या में भी पारंगत थे। नालन्दा में चित्रकला के सबसे पहले नमूने स्तूप स्थल संख्या– 14 से प्राप्त हुए है।[5] इसके पश्चात नालन्दा से तब तक भित्ति चित्रकला का कोई उदाहरण नही मिला, जब तक कि सरायटीले का उत्खनन नही हो गया। सरायटीले का उत्खनन 1974 ई0 से 1982 ई0 तक भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग, पटना की देखरेख में सम्पन्न हुआ, जिससे भित्ति चित्रकला के आकर्षक नमूने दृष्टिगोचर हुए। उत्खनन के फलस्वरूप भित्ति चित्रकला के अलावा पूर्णवर्मा का एक अभिलेख भी प्राप्त हुआ है।[6] सरायटीले से प्राप्त मन्दिर के गर्भगृह की दीवारों के चारो तरफ भित्ति चित्रकारियाँ की गयी है। जिनमें से कुछ चित्रकारियाँ नष्ट हो चुकी है तथा कुछ अस्पष्ट है। चूना पुती दीवार के ऊपरी हिस्से में लाल रंग से बनी कुछ मानव आकृतियाँ दिखाई पड़ती है तथा दीवार के निचले हिस्से में लाल, नीले तथा पीले रंग की ज्यामितीय एवं वनस्पतिक अलंकरण दृष्टव्य है।[7] नालन्दा से प्राप्त चित्रकारियों में मानव का अंकन होना सह स्पष्ट करता है कि चित्रकारों ने तत्कालीन समय के जनमानस को प्रदर्शित करने का कार्य किया है जिससे तत्कालीन समाज की झलक दिखाती है।

ए. घोष ने अपनी पुस्तक नालन्दा में लिखा है कि स्तूप स्थल

संख्या–14 में रंगीन चित्रकारी का चिह्न मिलना अत्यन्त रोचक है, क्योंकि नालन्दा में रंगीन भित्तिचित्र का यही एकमात्र उदाहरण बचा है, वह भी इसका बचा हुआ भाग खण्डित अवस्था में है तथा केवल शेर व हिरण की आकृति ही दृश्य है।[8] हालांकि यह नमूना भी अब विनष्ट हो चुका है, फिर भी इससे स्पष्ट होता है कि पाल काल से पूर्व ही नालन्दा में भित्तिचित्र होने लगी थी।[9] अजन्ता तथा बाघ की चित्रकला के पश्चात पाल कालीन चित्रकला में नालन्दा के भित्तिचित्रों का महत्वपूर्ण स्थान है। पालकालीन चित्रकला के अन्तर्गत अजन्ता की शैली में चित्रों का निर्माण हुआ जिसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण नेपाल के शाही दरबार, रायल एशियाटिक सोसाइटी कलकत्ता, भारत कला भवन, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, काशी महाराज संग्रहालय, रामनगर, वाराणसी तथा बोस्टन संग्रहालय, अमेरिका में संग्रहीत है।[10] 12वीं शताब्दी ई0 में मुस्लिम आक्रमणों के दौरान नालन्दा के बहुत से भिक्षु अपनी पाण्डुलिपियों के साथ नेपाल चले गये तथा वहाँ पर अपनी चित्रकला को जीवित रखा। उन्होंने वहाँ पर अनेक चित्रकारियां की। वहाँ पर बनी चित्रकारियों में नालन्दा की चित्रकला का प्रभाव देखा जा सकता है, परन्तु वहाँ की अपनी कुछ स्थानीय विशेषताएँ भी हैं, जैसे–मंगोलिया चेहरा।[11] फिर भी यह नालन्दा की चित्रकला की तरफ ध्यान आकर्षित करता है तथा उपर्युक्त पाण्डुलियों में प्राप्त चित्रकला को भी महत्व प्राप्त हुआ।

नालन्दा से प्राप्त चित्रों में मानव के अलावा वानस्पतिक अंकरणों का चित्रण है, परन्तु इनकी संख्या कम है, फिर भी दर्शनीय है। जिसमें घोड़ा, खड़े हाथी की आकृति, नर्तकी की आकृति, एक हाथ में दर्पण लिए घुटनों के बल बैठी नारी[12], आसन मुद्रा में जम्भल तथा कुछ वानस्पतिक अलंकरण भी है। बीरेन्द्र नाथ ने अपनी पुस्तक 'नालन्दा मुरल्स' में लिखा है कि नालन्दा में चित्रित हाथी बुद्ध के जीवन की किसी भी कथा से सम्बन्धित नही है[13] परन्तु उनका यह विचार उचित नहीं जान पड़ता, क्योंकि हाथी तो महात्मा बुद्ध के जीवन से प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित है। इसलिए बौद्धकला में हाथी का चित्रण तो सामान्य सी बात है, वह भी नालन्दा जैसे बौद्ध स्थल से मिले हाथी के चित्रण को बुद्ध से न जोड़ना किसी तरह से उचित नहीं जान पड़ता है। इसके अलावा भी हाथी भारतीय संस्कृति में रची–बसी है। हिन्दू धर्म में इसे इन्द्र के वाहन के रूप में मान्यता प्राप्त है तथा सर्वप्रथम हाथी का चित्रण हमें सिन्धु घाटी की सभ्यता से मिलता है।[14] नर्तकी की आकृति जो तत्कालीन समाज में मनोरंजन का द्योतक है। सरायटीलें के मन्दिर से प्राप्त पादपीठ पर एक दौड़ते हुए घोड़े का चित्र भी बनाया गया है। जिसे हम बौद्ध धर्म से सम्बन्धित कर सकते है, क्योंकि बौद्ध धर्म में घोड़े को भगवान बुद्ध के महाभिनिष्क्रमण के प्रतीक के रूप में माना जाता है।

नालन्दा से प्राप्त भित्तिचित्रों में बैठे हुए जम्भल का चित्र भी बौद्ध धर्म से सम्बन्धित है। सम्भवतः यह चित्र हिन्दू देवता कुबेर की तरह है। इसे कुबेर का बौद्ध संस्करण कह सकते हैं। इसका उदर निकला हुआ है तथा नकुलस धारण किये हुए चित्रित है जिससे रत्नों की वर्षा हो रही है। जम्भल के निकट ही एक स्त्री का भित्तिचित्र उकेरा गया है जो बैठी हुई अवस्था में है। उसके एक हाथ में दर्पण चित्रित है।[15] सम्भवतः स्त्री जम्भल की पूजा–अर्जन करते हुए धन की कामना कर रही है।

नालन्दा के भित्तिचित्रों में पुरूष तथा नारी दोनों को द्योती धारण किए हुए दिखाया गया है तथा नारी आकृतियों को कंधे पर दुपट्टा इस प्रकार रखा हुआ दिखाया गया है कि जिससे स्तन पूर्णतः ढक गये हैं।[16] पुरूष व नारी दोनों का धोती धारण करना एक नये वस्त्र विन्यास का द्योतक है। नारी का कंधे पर दुपट्टा ढकना है जो वर्तमान समय में भी प्रचलन में है। अजन्ता के चित्रकारों ने अपने पात्रों को जिस प्रकार विविध परिधानों से युक्त चित्रित किए हैं, वैसा नालन्दा में दिखाई नहीं देता।[17] नालन्दा के चित्रों में नारी आकृतियों को कनवाली, हार, चूडियां तथा बाजूबंद धारण किये हुए दिखाया गया है जो कि इस समय स्त्रियों का गहनों के प्रति प्रेम को दर्शाता है।

जैसा कि विदित है नालन्दा में कमल पुष्पों का चित्रण बहुलता से किया गया है। यहाँ के भित्तिचित्रों में कमल पुष्पों का चित्रण कोई आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि हिन्दू, बौद्ध तथा जैन तीनों धर्मों में कमल की समान महत्ता है और नालन्दा तीनों ही धर्मों की तपस्थली रही है। कमल भारतीय पवित्रता का प्रतीक है, इसीलिए कमल का चित्रांकन भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला दोनों में समान रूप से हुआ है फिर भी यह स्पष्ट है कि हिन्दू चित्रकारों की अपेक्षा बौद्ध चित्रकारों ने कमल के अंकन को ज्यादा महत्व दिया है।[18] तथा अन्य कला केन्द्रों की तुलना में नालन्दा कला केन्द्र के चित्रकारों ने कमल के अंकन को अधिक महत्व दिया है क्योंकि कमल महात्मा बुद्ध के ज्ञान का प्रतीक है। बोधगया में महात्मा बुद्ध को केवल कमल का पुष्प ही अर्पित किया जाता है। नालन्दा के भित्तिचित्रों की एक विशेषता यह भी है कि मुख्य प्रतिमा के आसन को अर्द्धवृत्ताकार रूप से बड़े आकार के कमल पुष्पों द्वारा अलंकृत किया गया है। ऐसा अलंकरण किसी अन्य कला केन्द्र में देखने को नहीं मिलता है।[19] नालन्दा से प्राप्त भित्तिचित्रों में सर्वाधिक स्पष्ट चित्र स्थानक हस्ति का है। इसका चित्रण बड़ी कुशलता पूर्वक किया गया है, जो चित्रकार की दक्षता व तन्मयता का परिचायक है।

इस शोध पत्र के माध्यम से नालन्दा कालीन चित्रकला को उजागर करना है कि नालन्दा न केवल शिक्षा केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध था बल्कि कला के एक महत्वपूर्ण अंग चित्रकला के रूप में भी प्रसिद्ध था। जिसका विकास पाल काल में देखने को मिलता है कि अजन्ता तथा बाघ के गुफा चित्रों की शैली आपस में काफी हद तक मिलती–जुलती है तथा शैली की दृष्टि से गुप्त परम्परा का पालन नालन्दा के पाल कालीन चित्रकारों ने किया है।[20], परन्तु यह स्पष्ट है कि नालन्दा के भित्तिचित्र अपनी अलग पहचान रखते हैं क्योंकि ये उत्तर पाल कला की देन है।[21] नालन्दा के चित्रकार अजन्ता एवं बाघ के चित्रकारी की शैली, शरीर रचना, आभूषणों, वानस्पतिक तथा ज्यामितीय अलंकरणों आदि से परिचित होते हुए भी भित्तिचित्रकारी में अपनी अलग पहचान बनाने में सफल हुए हैं तथा इन भित्तिचित्रों के अध्ययन से तत्कालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति की स्पष्ट झलक दृष्टिगोचर होती।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. नाथ, वीरेन्द्र, नालन्दा मुरल्स, कास्मो पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1983, पृष्ठ–10
2. वही, पृष्ठ 63
3. वही, पृष्ठ–64
4. वही, पृष्ठ 42–43
5. मिश्रा, बी.एन., नालन्दा, वालूम–3, दिल्ली, 1998, पृष्ठ–246
6. वही, पृष्ठ 246
7. श्रीवास्तव, ए.पी., नालन्दा की स्थापत्य एवं मूर्तिकला, रामानन्द विद्या भवन, दिल्ली, 1994, पृष्ठ–143
8. घोष, ए., नालन्दा, अनुवाद–केदारनाथ शास्त्री, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग, नई दिल्ली, 1963, पृष्ठ 33–34
9. नाथ, वीरेन्द्र, वही, पृष्ठ 269
10. वही, पृष्ठ–10

11. सिन्हा, बी.पी., कम्प्रहेन्सिव हिस्ट्री ऑफ बिहार, 1959, पृष्ठ–354
12. उपासक, सी.एस., नालन्दा–पास्ट एण्ड प्रजेन्ट, नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा, 1977, पृष्ठ–82
13. नाथ, वीरेन्द्र, वहीं, पृष्ठ–57
14. वही
15. श्रीवास्तव, ए.पी., वही, पृष्ठ–150
16. वही
17. नाथ, वीरेन्द्र, वही, पृष्ठ–58
18. श्रीवास्तव, ए.पी., वही, पृष्ठ–149
19. नाथ, वीरेन्द्र, वही, पृष्ठ 57
20. वही, पृष्ठ–59, मिश्रा, बी.एन., नालन्दा, वालूम–2, पृष्ठ–284
21. वही, पृष्ठ–50, मिश्रा, बी.एन., वही, पृष्ठ–284